कृषि मशीनीकरण में महिलाएँ: बाधाओं पर काबू पाना और सतत परिवर्तन लाना

शैलेन्द्र सिंह
वी.पी.– इनपुट (उपकरण एवं मशीनरी)
देहात (ग्रीन एग्रीवोल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड)

भारतीय कृषि व्यवस्था महिलाओं के योगदान पर बहुत अधिक निर्भर करती है। वे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और ग्रामीण विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, महिलाओं को अक्सर उन बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी उत्पादकता और आर्थिक सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं। सुधार की माँग करने वाला एक महत्वपूर्ण क्षेत्र कृषि मशीनीकरण तक उनकी पहुँच और उसका उपयोग है।

कृषि यंत्रीकरण में चुनौतियाँ

कृषि के मशीनीकरण में महिलाओं के लिए बहुमुखी चुनौतियों को कुछ प्रमुखों में वर्गीकृत किया गया है –

पहुँचः वित्तीय सीमाएं, भूमि स्वामित्व अधिकारों में असमानताएं, और गहराई से व्याप्त सामाजिक मानदंड ऐसे कई कारक हैं जो महिला किसानों की कृषि मशीनरी और उसके उपयोग तक सीमित पहुँच में योगदान करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँः प्रचलित लिंग भूमिकाएँ और रूढ़िवादिता नई तकनीकों को अपनाने और पारंपरिक रूप से केवल

पुरुषों के लिए उपयुक्त मानी जाने वाली मशीनरी के उपयोग में बाधा बन रही है।

उपकरणों का डिज़ाइनः अधिकांश कृषि मशीनरी पुरुष उपयोगकर्ताओं के लिए डिज़ाइन की गई है और यह महिलाओं के लिए कम सुलभ या आरामदायक है और इन उपकरणों के उपयोग में बाधा डाल सकती है।

प्रशिक्षणः महिलाओं को कृषि मशीनरी के संचालन और रखरखाव में प्रशिक्षण प्राप्त करने के कम अवसर मिल सकते हैं, जिससे इन उपकरणों का प्रभावी ढंग से लाभ उठाने की उनकी क्षमता में बाधा आती है। महिला किसानों के प्रशिक्षण के लिए की गई पहल से समय पर कृषि संचालन में स्थिरता आई है और उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

मशीनीकरण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना गहरा परिवर्तन लाने की क्षमता रखता हैः

कठिन परिश्रम में कमीः मशीनीकरण में महिला किसानों के शारीरिक बोझ को काफी कम करने की शक्ति है, जिससे उन्हें अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक दायित्वों जैसे अन्य उत्पादक प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए अधिक समय और ऊर्जा मिलती है।

उत्पादकता में वृद्धिः मशीनीकरण तक पहुँच वाली महिलाएं बड़े आकार की भूमि पर खेती कर सकती हैं, फसल की पैदावार बढ़ा सकती हैं, और अधिक आय उत्पन्न कर सकती हैं जो उन्हें सेवा क्षेत्र में शहरी क्षेत्र में नियोजित उनके समकक्ष के बराबर बना सकती है।

उन्नत आर्थिक सशक्तिकरणः उत्पादकता और आय में वृद्धि महिला किसानों के लिए अधिक

https://doi.org/10.52151/aet2024481.1717

आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा दे सकती है। बदले में, यह उन्हें अपने घरों और समुदायों के भीतर निर्णय लेने की अधिक शक्ति प्रदान करता है।

बेहतर खाद्य सुरक्षाः उन्नत उपकरणों और मशीनीकरण के साथ महिला किसानों को सशक्त बनाना सीधे खाद्य उत्पादन में वृद्धि में योगदान देता है। इससे स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है।

कृषि मशीनीकरण में महिलाओं की भागीदारी को आगे बढ़ाने के प्रमुख विधियाँ यहाँ दी गयी हैं:

लिंग–संवेदनशील नीतियाँः सरकारों और विकासात्मक संगठनों ने ऐसी नीतियां लागू की हैं जिनसे महिला किसानों को कृषि मशीनीकरण सेवाओं तक पहुँच के संबंध में महिलाओं की आवश्यकताओं और चुनौतियों का विशेष रूप से समाधान करने में सहायता मिली है। महिला उद्यमियों के लिए समग्र रूप से समर्थन का दायरा महिला के योगदान को और गति देगा।

वित्तीय सहायताः महिलाओं को ऋण, सब्सिडी और अन्य वित्तीय तंत्र तक पहुँच प्रदान की जानी चाहिए। इससे वे आवश्यक कृषि मशीनरी खरीदने या किराए पर लेने में सक्षम होंगे।

महिला–केंद्रित प्रशिक्षण कार्यक्रमः महिला किसानों के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रमों को कृषि मशीनरी के संचालन, रखरखाव और मरम्मत के बारे में ज्ञान प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमने राँची में कृषि विभाग द्वारा ऐसी अच्छी गतिविधि देखी, जहाँ आदिवासी महिलाएं साल भर भाग लेती हैं और कृषि मशीनरी सीखती हैं।

महिलाओं के अनुकूल डिजाइनः ट्रैक्टर और फार्म मशीनरी के निर्माता एर्गोनोमिक, सुरक्षा के संदर्भ में महिलाओं के अनुकूल अपनी मशीनों के डिजाइन की समीक्षा कर सकते

हैं और विशेष रूप से महिला ऑपरेटरों की सुविधा के लिए डिजाइन किए गए हैं।

प्रमुख रीपर निर्माता कृषिटेक की प्रमोटर सुश्री अर्चना पटेल का कहना है कि वह दिन दूर नहीं जब पूरे रीपर का संचालन महिला द्वारा किया जाएगा। अर्चना के नेतृत्व में कृषिटेक ने उद्योग में पहली बार हाइड्रोलिक संचालित टीआर माउंटेड रीपर विकसित किया है जो महिलाओं के लिए उपयोग करने के लिए अत्यन्त सुविधाजनक है।

चुनौतीपूर्ण सामाजिक मानदंडः जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देना और समुदायों को बातचीत में शामिल करना हानिकारक लैंगिक रूढ़िवादिता को खत्म कर सकता है। इससे कृषि यंत्रीकरण में महिलाओं की सक्रिय और समान भागीदारी का मार्ग प्रशस्त होता है। सुश्री कीर्ति अमेठी में आजीविका मिशन में ब्लॉक मिशन मैनेजर हैं, उनके अनुसार उनकी महिला ने ड्रोन पर सरकार द्वारा हाल ही में आरम्भ की गई योजना में बहुत रुचि ली है। अपने डिज़ाइन के कारण ड्रोन का उपयोग करना आसान है और यह समाज में उत्थान की भावना भी देता है क्योंकि यह नवीनतम तकनीक है।

सफलता की कहानियाँ और रोल मॉडलः देहात और अग्रणी एग्रीटेक कंपनियाँ सफल महिला उद्यमियों और किसानों को प्रोत्साहित कर रही हैं, जिन्होंने उत्पादकता बढ़ाने और समृद्धि की परिणति के लिए मशीनीकरण को अपनाया है। वे दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। उनकी कहानियों को साझा करना कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने में प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी क्षमता को रेखांकित करता है। कृष–ई और ऐसी कई एग्री इनपुट कंपनियाँ गोष्ठियाँ आयोजित कर रही हैं और मशीनीकरण में लगी महिलाओं के अग्रणी उदाहरण साझा कर रही हैं।

कृषि मशीनीकरण में महिलाओं के योगदान से ग्रामीण भारत की समृद्धि और निरंतर खाद्य सुरक्षा में तेजी से वृद्धि हो सकेगी। अधिक से अधिक महिलाएं ग्रामीण इलाकों में रहेंगी और कृषि को आजीविका के रूप में अपनाएंगी